महाभारत सभा पर्व के द्रोपदी प्रकरण का सार- यहाँ वैशम्पायन द्रौपदी के चेतावनी युक्त विलाप का वर्णन करते हैं, जहाँ दुःशासन द्रौपदी को घसीटते हुए ला रहा है। जिस कारण वह बार-बार पृथ्वी पर गिर पड़ती है तथा सभागार तक अपमानपूर्वक लाए जाने पर वह कहती है, कि- जो कार्य विवाहिता होने के पश्चात् अब तक नहीं किया गया, वह अभी उसके साथ हो रहा है। जिस राजमहल में उसे सम्मान के साथ लाया गया, वहाँ उसका अपमान किया जा रहा है तथा सभी वरिष्ठ लोग भी बैठकर इस दृश्य को देख रहे हैं, तो वह कहती है कि उसे भी अपनी अस्मिता, अपने आत्म सम्मान व स्वाभिमान के लिए वह कार्य कर लेने चाहिए, जो आज तक उसने नहीं किए है अर्थात् जिन मूल्यों को आज तक उसे समझाया गया, उनके विषय में वह अपने वरिष्ठ लोगों से प्रश्न करते हुए कहती है कि- सबसे पहले तो मैं अपने धर्म का पालन करते हुए सब वरिष्ठ जनों को प्रणाम करती हूँ, जो मैं अब तक घबराहट तथा अपमान के कारण नहीं कर पाई। द्रौपदी कहती है कि मैं सबसे पहले स्वंयवर के समय में ही सभा में आयी थी, उसके अलावा अन्य किसी भी अवसर पर किसी ने मुझे नहीं देखा तथा इस विषय को सदैव मेरे सम्मान से जोड़ा गया, तो अब वह सम्मान कहाँ गया कि जो आज मैं यहाँ तक घसीट कर लाई गई हूँ और सभा के भीतर सभी लोगों के नेत्रों का लक्ष्य बनकर रह गई हूँ। क्या ये वही पांडव है? जो पहले मेरा वायु के द्वारा होने वाला स्पर्श भी सहन नहीं कर सकते थे और आज इस दुष्ट दुःशासन के द्वारा अपमानित किए जाने चुपचाप बैठे हैं। मैं कुरूवंश की पुत्रवधू सदैव पुत्री के समान समझी गई हूँ, तो आज किस कारण वही सब कुरुवंशी मेरे अपमान को सहन कर रहे हैं, क्या आज मैं उनकी पुत्री नहीं रही हूँ अथवा इस वंश का 'स्त्री सम्मान' करने का कुल धर्म नष्ट हो गया है। पर भी मैं पाण्डवो की पत्नी, कृष्ण की सखी, क्षत्रिय वर्ण की कन्या आज आप सबके लिए दासी के समान हो गई हूँ, जो मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार किया जा रहा है। इस प्रकार अपने प्रश्नों को पूछती हुई द्रौपदी कहती है कि मैं इन सब प्रश्नों का उत्तर आप सब आर्यजनों के सुनना चाहती हूँ ताकि मैं उसी के अनुकूल व्यवहार कर सकूँ। क्या सचमुच मैं आप सब लोगों के लिए जुए मे जीतने वाली एक वस्तु मुख से के समान आज हो गई हूँ?

पूर्व विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल अर्थात् हमारी वैदिक सभ्यता से ही नारी को सदैव सम्माननीय दृष्टि से देखा गया। जहाँ उसे समझौते करने पड़े वहाँ उसने समझौते भी किए, परन्तु जहाँ परिस्थितियाँ विषम हो गई अर्थात् समाज में समझौता हीन संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई तब नारी ने अपने आत्मस्वाभिमान की रक्षा के लिए पुरुष प्रधान समाज में निहित स्त्री के प्रति दोहरी मानसिकता पर कुठाराघात करते हुए, अपने अधिकार व सम्मान के लिए प्रयास भी किए। यह स्थिति हम महाभारत के सभापर्व में द्रौपदी के चेतावनी युक्त विलाप के रूप में दिखाई पड़ती है, जहाँ द्रौपदी सभा में उपस्थित समस्त सभासदों से उसके प्रति किए गए दुर्व्यवहार के विषय में प्रश्न करती है और नारी समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए नारी के प्रति समाज में व्याप्त दोहरी मानसिकता व दोहरे मापदण्डों को अभिव्यक्त करती है कि क्या ये सभी सभासद वही हैं, जिन्होंने सदैव मुझे सम्माननीय दृष्टि से देखा और आज मेरे इस अपमान को देखकर भी चुप है। क्या वास्तव में आप सब उस सम्मान के पात्र रहे हैं, जो मेरे द्वारा आप सबको दिया गया है। क्योंकि जो इस कृत्य को करते हुए देख रहा है, वह भी इस दुष्कृत्य में उतना ही भागीदार है जितना की यह दुःशासन।

इस प्रकार द्रौपदी सम्बन्धि इस प्रकरण से उस समय के समाज में नारी अस्मिता सम्बन्धि मूल्यों का तो ज्ञान होता ही है, साथ ही नारी की अस्मिता सम्बन्धि सामाजिक मानसिकता को भी प्रश्नचिह्न अंकित करती है, जिसमें एक तरफ तो नारी की पूजा अर्थात् सम्मान देने पर वहाँ देवताओं का वास बताया गया है तथा दूसरी तरफ उसके साथ क्रुर व अमानवीय व्यवहार किए जाने पर भी किसी प्रकार का विरोध अथवा उसे रोकने का प्रयास भी नहीं किया जाता। इस प्रकरण से ज्ञात होता है कि नारी समाज में सहभागी तो है, परन्तु उसे वह स्थान नहीं दिया जाता, जो दिया जाना चाहिए। इन धारणाओं को तभी तोड़ा जा सकता है, जब समाज यह स्वीकार करे कि स्त्री की अपनी प्राकृतिक विशेषताएँ है, वह स्त्री को केवल स्त्रीत्व के बंधन में ही न बांधे अपितु समाज उसके मनुष्यत्त्व को स्वीकार करे। अगर ऐसा नहीं होगा तो इस समझौताहीन संघर्ष से ही नारी की अस्मिता का निर्माण हो सकेगा। अत: यह भी कहा जा सकता है कि स्त्री को मनुष्यत्व रूप में न देखने की भावना ने भी स्त्री विमर्श, स्त्रीत्ववाद, स्त्री सशक्तिकरण, स्त्रीवादी चिंतन, स्त्री अस्मिता मूल्य आदि विषयों को उभारा है। इसके लिए आवश्यक है कि नारी अस्मिता मूल्यों को प्रभावी बनने के लिए अपने को स्वयं सशक्त करे तथा संगठित होकर प्रयास करे और पुराने जीर्ण हो चुके विचारों व धारणाओं को बदलकर नए विकल्पों का निर्माण करें।

Lecture by-Dr. Ritu Mishra

3rd SEM.

Department of Sanskrit

Shivaji College.